

वशिव मगरमच्छ दविस

प्रलमिस के लयि:

वशिव मगरमच्छ दविस, मगरमच्छ की प्रजातयिँ तथा वतलरण, मगर या मारुश मगरमच्छ, एशुअरी या लवणीय जल के मगरमच्छ, घड़यल

मेनुस के लयि:

मानव-मगरमच्छ संघरुष

चरुा में क्युँ?

प्रतविरुष 17 जून कु 'वशिव मगरमच्छ दविस' मनाया जाता है ।

प्रमुख बढु:

- यह दुनया भर में लुप्तपराय मगरमच्छुँ की सुथतल कु उजागर करने के लयल एक वैशुवल कु जागरुकता अभयलन है ।
- मगरमच्छ-मानव संघरुष की बढुती घटनाकुँ कु देखते हुए 'मगरमच्छ संरकुषण प्रयासुँ' पर फरल से वचलर करने की आवशुयकता है ।

भारत में मगरमच्छ की प्रजातयलँ:

- भारत में तीन प्रकार की मगरमच्छ प्रजातयलँ (Crocodylian Species) प्राकुतकल रूप से पाई जाती हैं:

मगरमच्छ की प्रजातयलँ	वैजुानकल नाम	ववलरण
मगर या मारुश मगरमच्छ	कुरुकुडायल पेलुसुदरसल (Crocodylus palustris)	<ul style="list-style-type: none"> ■ मगर सबसे अधकल वसलतुत कुषेतर में पाया जाता है । ■ भारत के अलावा मगर अनुय दकुषणल एशयलई देशुँ में भी पाया जाता है । ■ IUCN की 'सुभेदुय' सुची में शामिल है ।
एशुअरी या लवणीय जल के मगरमच्छ	कुरुकुडायलस पोरस (Crocodylus porosus)	<ul style="list-style-type: none"> ■ एशुअरी मगरमच्छ ओडशल कु भीतरकनकल राषुदुरीय उदुयान, पशुचमल बंगाल के सुंदरवन कुषेतर तथा अंडमान एवं नकुकुबार दुवलप समूह में पाया जाता है । ■ भारत के अलावा यह दकुषणल पूरुव एशयल तथा उतुतरी ऑसुदुरेलयल में भी पाया जाता है । ■ IUCN की कम चतलनीय Least Concern सुची में शामिल है ।
घड़यल	गैवललसल गैंगुटकलस (Gavialis gangeticus)	<ul style="list-style-type: none"> ■ घड़यल जुयादातर हमललयी नदयलँ में पाया जाता है । घड़यल अपेकुषाकुत हानरलहतल माना जाता है कु मुखुयत: अपने भुकन के लयल मतसुय प्रजातयलँ पर नरुभर रहता है । ■ आनुवांशलकल रूप से मगरमच्छ की अनुय प्रजातयलँ की तुलना में कमजुुर होता है । ■ IUCN की 'गंभीर रूप से संकटापनुन' (Critically Endangered) सुची में शामिल है ।

भारत में मानव-मगरमच्छ संघरुष के प्रमुख हॉटसुपुऑट:

- गुजरात में वडुदरा:
 - वडुदरा नगर कु 'मानव-बहुल परदुशुय' में मगरमच्छुँ के एक दुवलप के रूप में वरुणतल कयल जाता है ।
 - शहर के मधुय से बहने वाली वशलवामतुलरी नदी में 200 से अधकल मगर पाए जाते हैं ।
 - मानसून के समय इस कुषेतर में मगरमच्छुँ के घरुँ में घुसने की सुचना प्रयाय: मीडयल में वुयापुत रहती हैं ।
 - वडुदरा की नगरपालकल सीमा में मगरुँ की संखुया जहाँ वरुष 1950 में 250 थी वह वरुष 2020 में बढुकर 289 हु गई है ।
- राजसुथान में कुुटा:
 - कुकुंदरा हललस राषुदुरीय उदुयान, राजसुथान में चंबल नदी पर अवसुथतल है । जहाँ मगर तथा घड़यल दुनुनुँ की बहुसंखुयक रूप में पाए जाते हैं ।

- वर्ष 2012 में जवाहर सागर अभयारण्य, चंबल घड़ियाल अभयारण्य, दर्रा अभयारण्य के कुछ भागों को मिलाकर मुकुंदरा हिल्स को राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।
- चंबल नदी पर बनाए गए कोटा बैराज के आसपास शहरीकरण एवं अतिक्रमण तथा रेत खनन के कारण मानव-मगरमच्छ संघर्ष में वृद्धि हुई है।

■ ओडिशा में भीतरकनिका:

- वर्ष 1975 में भीतरकनिका में केवल 96 मगरमच्छ थे। परंतु प्रजनन और पालन कार्यक्रम (Breeding and Rearing Programme) शुरू करने के बाद वर्ष 2020 में इनकी संख्या बढ़कर 1,757 से अधिक हो गई है।
- भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान के पराधीय क्षेत्र में छह पंचायतें स्थित हैं। जब क्षेत्र में उच्च ज्वार की स्थिति होती है तो अनेक समुद्री मत्स्य प्रजातियाँ यहाँ राष्ट्रीय उद्यान में प्रवेश कर जाती हैं। जनिहें एकत्रित करने के लिये लोग मगरमच्छ के संरक्षण जल नकियों में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे मानव-मगरमच्छ संघर्ष देखने को मिलता है।

उड़ीसा में घड़ियाल:

- उड़ीसा में भी घड़ियाल पाए जाते हैं परंतु यहाँ पर घड़ियाल चंबल नदी के समान प्राकृतिक रूप से नहीं पाए जाते हैं अपितु मुख्यतः प्रजनन केंद्रों में इनका संरक्षण किया जाता है।
- वर्ष 2019 में उड़ीसा अंगुल ज़िले में सतकोसिया घाट पर केवल 14 घड़ियाल तथा भुवनेश्वर के पास नंदनकानन चड़ियाघर में कम-से-कम 90 घड़ियाल हैं।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह:

- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में मानव-मगरमच्छ संघर्ष देखने को मिलता है। वन विभाग द्वारा अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में कुछ वर्ष पहले कुलुगि (Culling) की सफ़ारिश की गई थी।
 - कुलुगि वांछित या अवांछित विशेषताओं के अनुसार एक समूह से जीवों को अलग करने की प्रक्रिया है।

नष्टिकर्ष:

- सामान्यतः मानव-मगरमच्छ संघर्ष तब देखने को मिलता है जब मानव मगरमच्छ के प्राकृतिक आवास क्षेत्र में प्रवेश करते हैं या उनके उनके आवास क्षेत्र को क्षति पहुँचाते हैं, अतः इनकी कुलुगि के स्थान पर प्राकृतिक आवास में ही इसके संरक्षण के प्रयास किये जाने चाहिये।

स्रोत: डाउन टू अर्थ